OM 15_Page 1 and 2 13-10-2014 17:01 Page 10

अहंकार का करें शिकार.....

- ब्र.कु. जगदीश हसीजा।

उक्ति प्रसिद्ध है कि अहंकारी नर को एक दिन लज्जित होकर सिर नीचा अवश्य करना पड़ता है अथवा कि मनुष्य को जितना अधिक अभिमान होता है उसे अन्त में उतनी ही अधिक उँचाई से गिरने-जैसा दु:ख अनुभव करना पड़ता है। उस समय उसकी सारी अकड़बाजी चूर हो जाती है और उसे बड़ी वेदना होती है। अत: अहंकारी मनुष्य तो उस सूखे और लम्बे बाँस की तरह है जोकि जंगल के अन्य बांसों के साथ टकरा कर आग लग जाने से आखिर भस्मसात हो जाता है।

आज मनुष्य जिस धन का गर्व करता है कल वह धन उसका साथ छोड़ सकता है क्योंकि धन कोई एक-रस, स्थिर और अविनाशी चीज़ नहीं है बल्कि धन को चंचल माना गया है। आज मनुष्य को जिस तन-शक्ति या जन-शक्ति का अभिमान है, वह भी तो एक दिन छोड़ जाने वाली है। ऐसा तो मनुष्य को दूसरों की जीवन-गाथा से भी मालूम होता है और प्रत्यक्ष भी दिखाई पड़ता है। अत: जबकि संसार की ऐसी ही गति है तो फिर अभिमान किस बात का?

अभिमान सभी विकारों का मूल है

भगवान कहते हैं कि यह देह-अभिमान ही सभी पापों और विकारों का मूल है और इसलिए यही सभी तापों का और माया के शापों का भी मूल है। लोग तो पाँचों विकारों में से काम को सब से पहले और अहंकार को सबसे बाद में गिनते हैं परन्तु वास्तव में सबसे पहला विकार अहंकार ही है, क्योंकि इसी से ही दूसरे विकारों की भी उत्पत्ति होती है। देह का अभिमानी मनुष्य ही स्वयं को पुरुष के भान और दूसरे को स्त्री की दृष्टि से देखकर व्यक्तभाव को प्राप्त होता है और वासनाओं के वश होता है अर्थात् काम रूपी कटारी से दूसरे को काटता है। अभिमानी मनुष्य के अभिमान की भावना को ठेस लगने से ही उस में क्रोध पैदा होता है। पुनश्च, अपने अभिमान को, अपने पोज़ीशन और शान को बनाए रखने के लिए ही मनुष्य लोभ का और रिश्वत आदि का आसरा लेता है। फिर, जिन चीज़ों को वह अहंकार तथा लोभ के वश होकर इकट्ठा करता है, उनमें उसका मोह तो हो ही जाता है। इस प्रकार, स्पष्ट है कि अहंकार अन्य सभी विकारों का बीज है। अत: परमपिता परमात्मा कहते हैं कि अब अभिमान को तथा देह-अहंकार को छोड़कर देही-अभिमानी बनो।

अंहकार का भविष्य

अब हम परमपिता परमात्मा द्वारा जान चुके हैं कि शीघ्र ही इस पुरानी, कलियुगी दुनिया का महापरिवर्तन होने वाला है और सतयुगी पावन दुनिया स्थापन हो रही है। यह बात हमारे सामने बिल्कुल स्पष्ट है, यह कोई कल्पना नहीं है। परमपिता शिव ने अब यह भी समझाया है कि इस संगम समय में जो जितना निर-अभिमानी और नम्र-चित्त बनेगा उसका जीवन उतना ही श्रेष्ठ बनेगा और वह आने वाली पावन तथा दैवी सृष्टि में उतना उच्च देव पद प्राप्त करेगा। फिर, नम्र-चित्त मनुष्य का प्रत्यक्ष फल हम इस जीवन में भी देख रहे हैं कि वह शान्त और प्रिय होता है और उसे यम का भय भी नहीं होता। अत: जबकि अहंकारी का परिणाम और निरहंकारी की प्रारब्ध दोनों हमारे सामने हैं और जबकि इस अहंकारी सृष्टि का विनाश होना ही है। इसलिए जैसे परमपिता परमात्मा निराकार और निरहंकारी हैं और इस कारण बहुत ही लोकप्रिय हैं, वैसे ही हमें भी अब निज ज्योति-बिन्दु स्वरूप में स्थित होना चाहिए क्योंकि इस पुरुषार्थ से ही हम स्वर्ग के मालिक बनेंगे। अब हमें जीते-जी अपने अहंकार को मारना चाहिए तभी हमें जीवन-मुक्ति पद की तथा अत्यन्त सुख की प्राप्ति होगी। अहंकारी मनुष्य तो उस अति सुखमय देव-सृष्टि में जा ही नहीं सकता बल्कि उसे तो धर्मराजपुरी में दण्ड भोगना पड़ता है। तो जबकि अहंकारी तथा निरंहकारी दोनों का भविष्य स्पष्ट रूप से हमारे सामने है तो हमें चाहिए कि अब हम नम्र-चित्त बनें तथा देह-अभिमान को छोड़कर स्वयं को देही-निश्चय करें।

परमपिता परमात्मा शिव की शुभ सम्मति

परमपिता परमात्मा कहते हैं कि आज विश्व में अशान्ति की सारी समस्या अहंकार ही के कारण है। कोई स्वयं को सेठ-स्वामी माने बैठा है तो कोई धनी-दानी। कोई स्वयं को नेता मानकर अभिमान कर रहा है तो कोई अभिनेता। इस प्रकार सभी अहंकार के नशे में चूर हैं। उन्हें यह मालूम ही नहीं है कि सतयुग में दास-दासियाँ भी इनसे अधिक सुखी होते हैं, उनके पास भी सोने के महल होते हैं। उस दैवी मर्यादा वाली सृष्टि में न कोई किसी का अपमान करता है और न किसी को किसी चीज़ का अभिमान होता है। निर-अभिमानी बनने के कारण ही तो उनकी इतनी उच्च प्रारब्ध होती है। अत: जबकि हमारी उस उच्च स्थिति से हमें अभिमान ने ही गिराया है तो उस गिरी हुई स्थिति में प्राप्त तमोगुणी वस्तुओं का अभिमान करना तो निरी मूर्खता है। हमें तो मन में यह सोचना चाहिए कि आज सतयुग के स्वर्ण महल की भेट में हमारे कांटों के ताज वाला धनवान अथवा नेता पद है और वहाँ के फुल-प्रूफ विमान की बजाए जो कार है, वह सब बेकार हैं, क्योंकि इनका संचय करने के पीछे कोई-न-कोई विकार है और इनके साथ दु:ख लगा हुआ है। सतयुगी हीरे-तुल्य जीवन की भेंट में तो वर्तमान जीवन कौड़ी तुल्य है! अत: इसका अभिमान कैसा?

अत:परमपिता परमात्मा शिव कहते हैं कि - ''हे वत्स, मैं थोड़े समय के लिए ही तो अब इस सृष्टि में आया हूँ। मैं अधिक समय तो यहाँ ठहरता भी नहीं हूँ क्योंकि शीघ्र ही सतयुगी पावन सृष्टि की स्थापना करके मुझे जाना है। अत: सारे कल्प की आयु की भेंट में मैं कह सकता हूँ कि मैं एक घड़ी भर के लिए ही आप मनुष्यात्माओं की इस सृष्टि में आया हूँ। अब छोटे-बड़े सभी के सिर पर काल खड़ा है क्योंकि सब मानो मरे ही पड़े हैं, अब इनके विनाश में कोई अधिक समय शेष नहीं है। अत: जबकि इस भंभोर को आग लगनी ही है तो उस समय आप कोई पुरुषार्थ नहीं कर सकोगे। पुरुषार्थ का समय तो उससे पहले है अर्थात् यह दो घड़ियाँ ही हैं। अत: अब यह अभिमान छोड़ दो कि मैं नेता हूँ, सेठ हूँ, समझदार हूँ, आदि-आदि। अब इनकी ओर मन को केन्द्रित न करके मेरी ओर अटेन्शन दो! अब यह सब कुछ मेरे अर्पण करके आप ट्रस्टी अर्थात् निमित्त होकर इनसे कार्य लो। अब देह का भी अभिमान छोड़ दो और सर्वस्व सहित मेरे हो जाओ तो मेरा सब-कुछ आपका हो जायगा। बताओ क्या इतना सस्ता और लाभदायक सौदा भी स्वीकार नहीं है?''

मूल्यों की री-इंजीनियरिंग - पेज 1 का शेष

अपने उन पुरातन मूल्यों की आवश्यकता है। हमें अपने जीवन में बेहतर तरीके से इन गुणों एवं मूल्यों की री-इंजीनियरिंग करनी है। उन्होंने कहा कि ये ईश्वरीय विश्व विद्यालय जो शिक्षा दे रहा है, वो दुनिया के किसी भी विश्व विद्यालय में नहीं दी जाती।

ब्र.कु. रंजना जिन्होंने काफी समय एक इंजीनियर के रूप से भी कार्य किया, ने अपने अनुभव के आधार से बताया कि आज हम इंजीनियरिंग के क्षेत्र में जो भी कार्य कर रहे हैं, उसमें भी हमें गुणवत्ता एवं श्रेष्ठ कार्य-प्रणाली की आवश्यकता है। जितना हम आंतरिक रूप से सशक्त होंगे उतनी ही कार्य में श्रेष्ठता आती जाती है। उन्होंने कहा कि आज सब कुछ करते हुए भी जीवन में प्रेम, सुख एवं शान्ति नहीं है। वास्तव में ये चीज़ें हमारे स्वयं के भीतर हैं, लेकिन हम इनको बाहर व्यक्तियों एवं वस्तुओं में खोजते हैं, जोकि स्वयं ही परिवर्तनशील हैं।

उन्होंने आगे कहा कि हमें स्वयं को महसूस करने की आवश्यकता है, हम कोई शरीर नहीं हैं, शरीर तो प्रकृति से बना हुआ है। हम एक ऊर्जा हैं, जो दिखाई नहीं देती, जिसे सिर्फ महसूस कर सकते हैं। इसी ऊर्जा को हम आत्मा कहते हैं। आज हमारी खुशी दूसरों पर आधारित है, हमारा रिमोट कंट्रोल दूसरे के हाथों में है, अगर सब ठीक है तो मैं ठीक हूँ, लेकिन आध्यात्मिकता हमें सिखाती है कि मैं ठीक हूँ तो सब ठीक हो जायेगा। आज हम सभी को शरीरों के आधार से देखते हैं जिससे ही धर्मभेद, भाषाभेद एवं लिंगभेद पैदा होता है, अगर हम सभी को एक आध्यात्मिक चेतना अथवा आत्मा के रूप में ही देखेंगे तो सबके लिए प्रेम, शान्ति एवं सद्भावना ही उत्पन्न होगी। कार्यक्रम में विभिन्न कम्पनीज़ से लगभग 150 इंजीनियर्स एवं एग्ज़ीक्युटिव्स ने भाग लिया।

दिल्ली-मालवीय नगर। सतीश उपाध्याय,भाजपा अध्यक्ष दिल्ली को ओमशान्ति मीडिया भेंट करने के बाद मीडिया की गतिविधियों से अवगत कराते हुए ब्र.कु. नीरू व ब्र.कु. लक्ष्मण।

नई दिल्ली। 'परमात्म शक्ति द्वारा महापरिवर्तन का समय'' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए भाजपा नेता लाल कृष्ण आडवाणी, ब्र.कु. बृजमोहन, महिला एवं बाल विकास मंत्री मेनका गांधी, राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी, ब्र.कु. शिवानी तथा अन्य।

चण्डीगढ़। 'सात अरब सत्कर्मों की महायोजना' कार्यक्रम में मंचासीन हैं पंजाब हरियाणा हाई कोर्ट के न्यायाधीश अरुण पल्ली, ब्र.कु. अचल, ब्र.कु. अमीरचंद, सांसद किरण खेर तथा ब्र.कु. राम प्रकाश,न्यू यॉर्क।

चंद्रपुर-महा.। ऑर्डेन्स फैक्ट्री के ओ.एस.एम. को ईश्वरीय सेवाओं के बारे में बताने के बाद समूह चित्र में ब्र कु.दीपक तथा अन्य।

धमतरी। अभियंता दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित विचार संगोष्ठी का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. सरिता,सेवाकेन्द्र संचालिका, ब्र.कु. प्राची, एच.आर. कुटारे,प्रमुख अभियंता जल संसाधन विभाग,रायपुर, के.एल. वाही,पूर्व प्राध्यापक तथा अन्य।

सुन्नी-शिमला। दशहरा मेला का अवलोकन करने के पश्चात् मुख्य मंत्री राजा वीरभद्र सिंह, ब्र.कु. शकुंतला, ब्र.कु.रवादास तथा अन्य।

अफ्रीका-नाइजीरिया। महिलाओं के लिए 'हार्मनी इन रिलेशनशिप' विषय पर आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. साधना,दिल्ली किंग्सवे कैम्प।